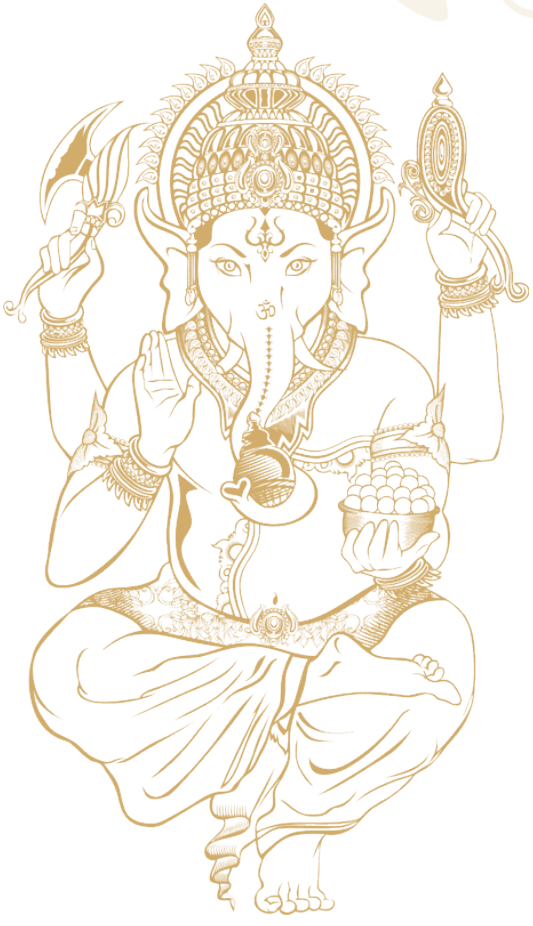

Bikramjeet Singh Kalsi

02 May 1991

10:10 AM

Jalandhar

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119139501

तिथि 02/05/1991 **समय** 10:10:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Jalandhar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:44:24
अक्षांश 31:19:00 उत्तर **रेखांश** 75:34:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:27:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	00:20:40 घं
वेलान्तर	00:02:58 घं
सूर्योदय	05:42:55 घं
सूर्यास्त	19:07:10 घं
चैत्रादि संवत	2048
शक संवत	1913
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	4
नक्षत्र	ज्येष्ठा
योग	परिघ
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	यी-यीशू
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

बुध 6वर्ष 7मा 28दि

सूर्य

29/12/2024
29/12/2030

सूर्य	17/04/2025
चन्द्र	17/10/2025
मंगल	22/02/2026
राहु	17/01/2027
गुरु	05/11/2027
शनि	17/10/2028
बुध	23/08/2029
केतु	29/12/2029
शुक्र	29/12/2030

योगिनी

भद्रिका 1वर्ष 11मा 15दि

भद्रिका

16/04/2024
17/04/2029

भद्रिका	26/12/2024
उल्का	26/10/2025
सिद्धा	16/10/2026
संकटा	26/11/2027
मंगला	16/01/2028
पिंगला	26/04/2028
धान्या	26/09/2028
भ्रामरी	17/04/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			24:19:04	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	---	0:00			
सूर्य			17:33:11	मेष	भरणी	2	शुक्र	मंगल	उच्च राशि	1.72	पुत्र	पितृ	विपत
चंद्र			24:46:30	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	नीच राशि	1.13	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			22:15:52	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.19	मातृ	भ्रातृ	मित्र
बुध			24:49:16	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	नीच राशि	1.22	अमात्य	ज्ञाति	जन्म
गुरु			11:25:27	कर्क	पुष्य	3	शनि	चंद्र	उच्च राशि	1.51	कलत्र	धन	अतिमित्र
शुक्र			28:30:03	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	शनि	स्वराशि	1.59	आत्मा	कलत्र	साधक
शनि			12:55:08	मक	श्रवण	1	चंद्र	राहु	स्वराशि	1.19	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		27:34:50	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	चंद्र	नीच राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		27:34:50	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	नीच राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

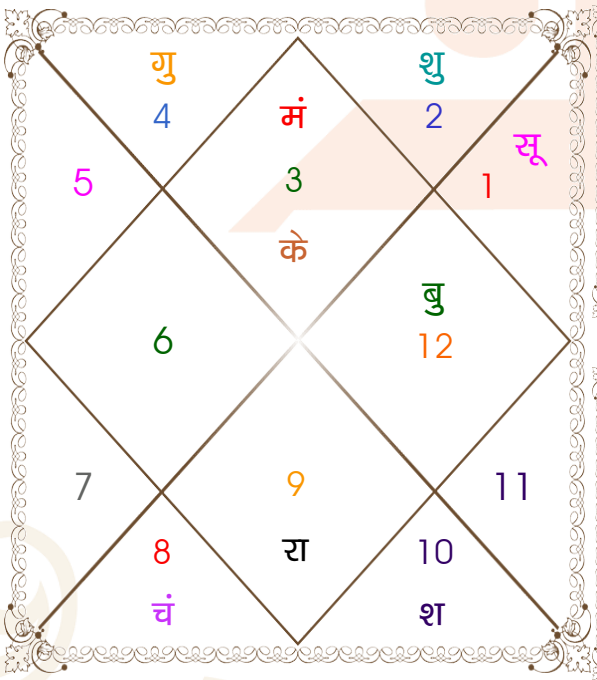

चन्द्र कुंडली

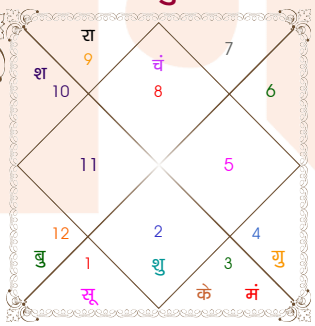

नवमांश कुंडली

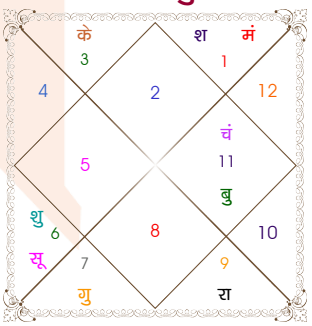

सर्वाष्टकवर्ग

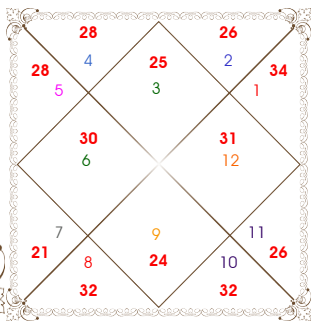

दशमांश कुंडली

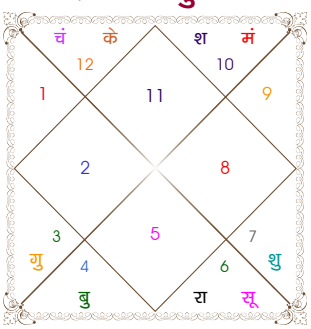

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

नक्षत्रफल

आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशिस्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, गण राक्षस, योनि मृग, नाड़ी आद्य तथा वर्ग मृग होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "यि" या "यी" से प्रारम्भ होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। इस नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने के कारण जातक की माता को अरिष्ट होता है। अतः जन्म समय में ही शास्त्रीय विधि से इस नक्षत्र की शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न कराने चाहिए। 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का विधिपूर्वक हवन करना चाहिए। इस प्रकार करने से नक्षत्र का दोष प्रभावहीन हो जाएगा तथा सम्बन्धित जातक को कोई कष्ट नहीं होगा।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

समाज में आपकी ख्याति हमेशा व्याप्त रहेगी तथा सभी लोग आपको सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता दर्शनीय रहेगी जिससे आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा। विविध प्रकार के धन वैभव से युक्त रहकर आप एक सामर्थ्यशाली पुरूष रहेंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करने में सक्षम होंगे। समाज में अपने प्रभाव को स्थापित करने में भी आप सफल होंगे तथा सभी लोग आपके प्रताप को हृदय से स्वीकार करेंगे। आप में नेतृत्व तथा वक्तृत्व दोनों शक्तियां विद्यमान रहेगी। अतः आप एक श्रेष्ठ तथा लोकमान्य नेता के रूप में अपना स्थान भी स्थापित कर सकेंगे।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

आपका स्वभाव उग्रता से युक्त रहेगा तथा इसी क्रोधी स्वभाव के कारण यदा कदा आप को मानसिक तथा आर्थिक परेशानियां उत्पन्न होंगी। समाज में अन्य महिलाओं से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध भी स्थापित रहेंगे। साथ ही धर्म एवं ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण

श्रद्धा एवं भक्ति का भाव विद्यमान रहेगा एवं इसके अनुपालन में भी आजीवन यत्नशील रहेंगे।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक कोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपके समाज में बहुत से लोगों से मित्रता रहेगी तथा मित्र मंडली में आप प्रमुख एवं आदरणीय समझे जाएंगे। आपका स्वभाव सन्तोषी रहेगा तथा जो कुछ भी यथा शक्ति उपलब्ध हो उसी पर सन्तोष करके अपना जीवन पालन करेंगे। लेकिन धर्मानुपालन करते हुए भी आप की उग्रता में किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं आएगी।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरकोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा कोधी होता है।

आप प्रारम्भ से ही लेखन कार्य में रूचिशील तथा परिश्रमशील रहेंगे तथा कविता सृजन में आपको सफलता प्राप्त हो सकेगी। आप की प्रवृति भी सहनशील होगी एवं सुख दुःख को समान रूप से समझने की आप में दक्षता रहेगी। आप अत्यन्त चतुर एवं चालाक व्यक्ति होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को अपनी इसी प्रवृति से सम्पन्न करेंगे। आप निम्न श्रेणी के लोगों के द्वारा हमेशा पूज्य एवं श्रद्धेय रहेंगे। ये लोग आपको हृदय से आदर प्रदान करेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में कोध तथा उग्रता का

भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीड़ित रहेंगे।

वृश्चिक राशि में जन्म होने के कारण आपकी आखें सुन्दर तथा बड़ी बड़ी होगी एवं सीना भी विस्तृत रहेगा। साथ ही शारीरिक वर्ण में अल्प मात्रा में श्यामलता का समावेश रहेगा। आप के हाथ या पैर में मछली का भी चिन्ह अंकित हो सकता है। यदा कदा समस्त हस्त रेखाएं वज्र या पक्षी के आकार की होगी। आप अपने पिता तथा गुरूजनों से स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति करेंगे। बचपन में आप काफी समय तक रोग ग्रस्त भी रहेंगे। आप एक तीव्र बुद्धि के पुरूष रहेंगे। अतः अपने परिश्रम तथा योग्यता से सरकार में कोई उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित करने में भी सफल हो सकेंगे। आपके कार्य कठोर तथा क्रूरतापूर्ण होंगे अतः आप सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों में अपना कार्यक्षेत्र बना सकेंगे। कभी कभी आपके स्वभाव में दुष्टता का भाव उत्पन्न होगा जिससे अन्य जन आपसे कष्टानुभूति करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदर एवं मस्तक भी आकार में विस्तृतता से युक्त रहेगा। तथा अन्य जनों की सुन्दर वस्तुओं को देखकर लोलुपता की भावना का प्रदर्शन करेंगे। आपके शरीर में कोमलता या लावण्यता भी विधमान रहेगी। ईश्वर एवं धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा। आप की दाढ़ी एवं नाखून भी आघात युक्त रहेंगे। धन वैभव से आप युक्त रहेंगे। आप किसी न किसी कार्य को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा कार्य करने में दक्षता प्राप्त करेंगे। अपने बन्धु वर्ग से आपको सहयोग प्राप्त होता रहेगा। समाज में आप पराक्रमी पुरूष होंगे तथा अधिकांश लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप के स्वभाव में क्रोध की भी प्रवलता रहेगी। समाज में अन्य जनों से भी आपके निजी तौर से मधुर संबंध रहेंगे। इसके साथ ही मुकददमें या किसी अन्य कारण से आप सरकार द्वारा धनहानि प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रुगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनाढ्य पुरूष होंगे तथा परिवार के अतिरिक्त अन्य बहुत से जनों को आपके द्वारा सुख की प्राप्ति होगी। स्त्रियों के विषय में आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली सिद्ध होंगे। इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान तथा लाभ होगा। आप सरकारी सेवा में भी नियुक्त हो

सकेंगे। आप के मन में हमेशा अन्य जनों के धन को प्राप्त करने की इच्छा व्याप्त रहेगी तथा आजीवन इसके लिए आप प्रयत्नशील भी रहेंगे। साथ ही आपकी मति दृढता से युक्त होगी तथा आपके सभी कार्य दृढसंकल्प इच्छा से पूर्ण होंगे। साथ ही आप एक साहसी एवं निर्भय प्रवृति के भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त चुगलखोरी की प्रवृति भी यदा कदा आपमें दिखाई देगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप अपने जीवन काल में यदा कदा जुआ आदि खेलने में प्रवृत होंगे परन्तु इसमें आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। विवादादि में भी आपकी रूचि रहेगी तथा किसी न किसी से आपका झगड़ा या विवाद होता रहेगा। आप अपने हृदय से कमजोरी महसूस करेंगे। तथा जीवन में शान्ति आपको बहुत ही कम प्राप्त होगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

बाल्यकाल से ही आप अपने घर से बाहर दूसरी जगह निवास करेंगे तथा घूमने फिरने के भी आप शौकीन होंगे। आपकी प्रवृति भी अभिमानी होगी तथा समय समय पर अन्य जनों के समक्ष अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन आप करते रहेंगे। स्वजनों के प्रति भी आपके मन में स्नेह का भाव भी रहेगा तथा अपनी साहसी प्रवृति से धनार्जन आदि करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने की रहेगी। आपका मन भी कठोर रहेगा तथा दया एवं करूणा के भाव का इसमें प्रायः न्यूता रहेंगी। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी प्रवृति उग्र रहेगी तथा शीघ्र एवं अकारण ही उत्तेजित एवं क्रोधित होना आपके लिए सामान्य बात होगी। साथ ही तथा अन्य जनों से आपका परस्पर विवाद होता रहेगा। आप शरीर से बलवान रहेंगे परन्तु अधिकांश लोगों का आपके प्रति वैमनस्य का भाव रहेगा।

आप अपने जीवन काल में उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुल रह सकते हैं।

आपका शारीरिक स्वरूप भी विशेष सुन्दर नहीं होगा परन्तु आपकी वाणी कटु जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः अपने वार्तालाप मे आप मधुर शब्दो का प्रयोग करना चहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय होगी तथा प्रत्येक कार्य को स्वच्छन्दता पूर्वक बिना किसी हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगे। आपकी प्रवृति शान्त होगी तथा उपद्रवादि करने में आपकी बुद्धि नहीं रहेगी। आपके आजीविका के साधन भी अच्छे कार्यों से सम्बन्धित रहेंगे। सत्य एवं धर्म के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी एवं जीवन में इसका पालन करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। अपने स्वजनों के प्रति आपका हार्दिक स्नेह तथा लगाव रहेगा एवं इनके आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी प्रवृति साहसी तथा शूरवीरता से युक्त रहेगी वाद विवादों में आप प्रायः विजय ही प्राप्त करेंगे।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से

सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए अश्विन मास, षष्ठी, प्रतिपदा, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी विशेष सतर्क रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता अथवा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध नहीं हो रहे हो तो आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, तांबा, रक्त वस्त्र, चन्दन, गेहूं, मल्का आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए एवं सोमवार के उपवास भी रखने चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न कराने चाहिए। ऐसा करने से आपको पूर्ण रूपेण मानसिक शान्ति प्राप्त होगी एवं अन्य समस्त अशुभ फलो का प्रभाव नष्ट होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।